National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2026; 1(64): 206-208
© 2026 NJHSR
www.sanskritarticle.com

अनिल कुमार कश्यप
शोधार्थी, शिक्षा शास्त्र विभाग,
साई नाथ विश्वविद्यालय,
रांची, झारखंड

बेबी कुमारी
शोध निर्देशिका, मानविकी तथा
सामाजिक विज्ञान संकाय,
साई नाथ विश्वविद्यालय,
रांची, झारखंड

Correspondence:
अनिल कुमार कश्यप
शोधार्थी, शिक्षा शास्त्र विभाग,
साई नाथ विश्वविद्यालय,
रांची, झारखंड

भाषाई माध्यम एवं पारिवारिक प्रोत्साहन माध्यमिक स्तर का अध्ययन

अनिल कुमार कश्यप, बेबी कुमारी

सारांश

प्रस्तुत शोध के माध्यम से यह अध्ययन किया गया है कि पारिवारिक प्रोत्साहन की तुलना में यदि भाषाई माध्यम का उपयोग किया जाए तो शिक्षण प्रभावी हो सकता है। विद्यार्थियों की समझ का विस्तार हो सकता है। इस शोध कार्य में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का समवाय विधि के माध्यम से भाषाई माध्यम किया गया। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि यदि शिक्षण प्रक्रिया में पारम्परावादी पद्धति के स्थान पर समवाय विधि का प्रयोग किया जाए तो विद्यार्थियों की समझ और भाषा-अधिगम में उल्लेखनीय सुधार संभव है। इस शोध में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को समवाय विधि के माध्यम से प्रायोगिक शिक्षण प्रदान किया गया, जिसमें उनकी भाषाई पृष्ठभूमि एवं पारिवारिक सहयोग को भी ध्यान में रखा गया। शिक्षणोपरान्त पश्च-परीक्षण के दत्तों का मध्यमान अधिक पाया गया तथा प्रायोगिक एवं नियंत्रित समूहों के बीच सार्थक अंतर प्राप्त हुआ। अध्ययन से यह निष्कर्ष निकला कि हिंदी माध्यम से शिक्षण प्राप्त करने वाले तथा जिन विद्यार्थियों को परिवार से शैक्षणिक प्रोत्साहन मिलता है, उनमें भाषा-बोध, अभिव्यक्ति और विषय-समझ अपेक्षाकृत अधिक विकसित पाई गईं। सामान्यतः हिंदी शिक्षण में अध्यापक शब्दार्थ, व्याख्या और रचनाओं पर आधारित निश्चित उत्तरों पर अधिक बल देते हैं जिससे विद्यार्थियों की सृजनात्मक क्षमता सीमित रह जाती है।

प्रस्तावना

शिक्षा मानव व्यक्तित्व के समग्र विकास की आधारशिला है और भाषा उसका सर्वाधिक सशक्त उपकरण मानी जाती है क्योंकि यही माध्यम व्यक्ति के चिंतन संप्रेषण संवेदनशीलता तथा सामाजिक चेतना को आकार देता है। **सामान्यतः भाषा के दो रूप होते हैं-** मौखिक और लिखित दोनों रूपों की शिक्षा देने के लिए हम विद्यार्थियों को मौखिक एवं लिखित अभिव्यक्ति के अवसर प्रदान करते हैं। साहित्य की विविध विधाओं (पद्य एवं गद्य) का शिक्षण करते हैं और भाषा के व्याकरण का ज्ञान कराते हैं। समवाय प्रणाली में इस समस्त कार्य को एक साथ करने पर बल दिया जाता है। इसमें रचना कहानी पद्य आदि की शिक्षा देने के साथ-साथ ही प्रसंग और अवसरानुकूल व्याकरण की शिक्षा दी जाती है। उदाहरण के लिए रचना पढ़ाते समय यदि कई वाक्यों में संज्ञा शब्द आए हो तो विद्यार्थियों को संज्ञा का ज्ञान कराया जा सकता है।

माध्यमिक स्तर वह निर्णायक अवस्था है जहाँ विद्यार्थी बाल्यावस्था से किशोरावस्था की ओर अग्रसर होता है और उसकी बौद्धिक परिपक्वता, भावनात्मक संतुलन तथा भाषाई दक्षता स्थायी रूप ग्रहण करने लगती है। इस स्तर पर अपनाया गया **भाषाई माध्यम** विशेषतः मातृभाषा या दूसरी भाषा विद्यार्थियों की विषय-वस्तु की समझ अभिव्यक्ति क्षमता आत्मविश्वास और शैक्षणिक उपलब्धि को गहराई से प्रभावित करता है, वहीं **पारिवारिक प्रोत्साहन** जैसे माता-पिता की शैक्षिक जागरूकता सकारात्मक दृष्टिकोण अध्ययन के प्रति प्रेरणा तथा सहयोगी घरेलू वातावरण विद्यार्थियों की सीखने की प्रक्रिया को सुदृढ़ एवं अर्थपूर्ण बनाते हैं। भारत जैसे बहुभाषी एवं सामाजिक-सांस्कृतिक रूप से विविध देश में

भाषाई माध्यम और पारिवारिक प्रोत्साहन की संयुक्त भूमिका का अध्ययन न केवल अकादमिक दृष्टि से अत्यंत प्रासंगिक है, बल्कि यह शिक्षा की गुणवत्ता समान अवसर और समावेशी शिक्षण की दिशा में भी महत्त्वपूर्ण संकेत प्रदान करता है।

अतः प्रस्तुत शोध माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि के संदर्भ में भाषाई माध्यम एवं पारिवारिक प्रोत्साहन के अंतर्संबंधों का गहन विश्लेषणात्मक एवं तथ्यपरक अध्ययन प्रस्तुत करता है, जिससे भाषा शिक्षण की प्रभावशीलता बढ़ाने हेतु नीतिगत शैक्षिक एवं व्यावहारिक स्तर पर ठोस निष्कर्ष प्राप्त किए जा सकें।

संबंधित साहित्य का अध्ययन

सिंह निरंजन कुमार ने सन् 2011 में माध्यमिक विद्यालयों में हिंदी शिक्षण की स्थिति का अध्ययन किया। उनके अध्ययन में यह पाया गया कि माध्यमिक स्तर पर हिंदी शिक्षण में पारम्परिक शिक्षण विधियों का अधिक प्रयोग किया जाता है। शोध में विद्यार्थियों की भाषा-बोध क्षमता और अभिव्यक्ति कौशल में अपेक्षित विकास का अभाव सामने आया। उन्होंने हिंदी शिक्षण को अधिक प्रभावी बनाने हेतु आधुनिक एवं क्रियात्मक शिक्षण विधियों को अपनाने की आवश्यकता पर बल दिया।

अमरनाथ (2013) ने हिंदी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली विषय पर अपने अध्ययन में हिंदी आलोचना में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दों की अवधारणा विकास एवं प्रयोग का विश्लेषण किया है। उन्होंने यह स्पष्ट किया कि आलोचना की सुस्पष्टता और वैज्ञानिकता के लिए पारिभाषिक शब्दावली का मानकीकरण आवश्यक है। अध्ययन में यह भी रेखांकित किया गया कि स्पष्ट शब्दावली से आलोचनात्मक विमर्श अधिक प्रभावी और बोधगम्य बनता है। यह कार्य हिंदी आलोचना के सैद्धांतिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

शर्मा राजमणि (2014) ने हिंदी भाषा : इतिहास और स्वरूप विषय पर अपने अध्ययन में हिंदी भाषा की उत्पत्ति विकास क्रम और वर्तमान स्वरूप का विस्तृत विश्लेषण किया है। उन्होंने प्राचीन मध्यकालीन एवं आधुनिक काल में हिंदी के भाषिक परिवर्तन को ऐतिहासिक दृष्टि से प्रस्तुत किया। अध्ययन में हिंदी की संरचनात्मक विशेषताओं और सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभावों को भी स्पष्ट किया गया है। यह कृति हिंदी भाषा के ऐतिहासिक एवं भाषावैज्ञानिक अध्ययन के लिए एक महत्वपूर्ण संदर्भ मानी जाती है।

ललित कुमार ने सन् 2019 में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में भाषा शिक्षण हेतु समवाय विधि की प्रभावशीलता का अध्ययन किया। उनके शोध में यह पाया गया कि समवाय विधि के प्रयोग से विद्यार्थियों की भाषा-बोध क्षमता, रुचि और सहभागिता में उल्लेखनीय वृद्धि होती है। अध्ययन में यह भी स्पष्ट हुआ कि इस विधि से व्याकरण एवं साहित्य का समन्वित शिक्षण अधिक प्रभावी बनता है। परिणामस्वरूप भाषा शिक्षण की गुणवत्ता में सकारात्मक सुधार दृष्टिगोचर हुआ।

समस्या कथन

माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि पर भाषाई माध्यम एवं पारिवारिक प्रोत्साहन के वास्तविक प्रभाव को लेकर स्पष्ट एवं व्यवस्थित अध्ययन का अभाव है। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में यह समझना आवश्यक हो गया है कि ये दोनों कारक भाषा-अधिगम और समग्र शैक्षणिक विकास को किस प्रकार प्रभावित करते हैं।

शोध उद्देश्य

- भाषाई माध्यम और पारिवारिक प्रोत्साहन के संयुक्त प्रभाव का माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि पर अध्ययन करना।
- माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि पर भाषाई माध्यम (हिंदी/अंग्रेज़ी) के प्रभाव का अध्ययन करना।
- माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि पर पारिवारिक प्रोत्साहन के प्रभाव का अध्ययन करना परिकल्पनाएँ
- माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि में भाषाई माध्यम के आधार पर कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।
- माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि में पारिवारिक प्रोत्साहन के आधार पर कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।
- भाषाई माध्यम एवं पारिवारिक प्रोत्साहन के संयुक्त प्रभाव के संदर्भ में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध हेतु माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा संचालित निजी विद्यालयों में से यादृच्छिक चयन विधि से विद्यालय का चयन कर चयनित विद्यालय से नवीं एवं दसवीं कक्षा के विद्यार्थियों में से न्यादर्श हेतु यादृच्छिक चयन विधि से 100 विद्यार्थियों का चयन कर सिक्का उछालते हुए दो समूहों का निर्माण किया गया। तत्पश्चात् हिंदी माध्यम, अंग्रेज़ी माध्यम पर स्तर जाँचा गया जिसका विभाजन निम्नानुसार है:-

समूह	छात्र
हिंदी माध्यम	50
अंग्रेज़ी माध्यम	50

समस्या का औचित्य

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि में असमानता निरंतर देखने को मिलती है, जिसका एक प्रमुख कारण भाषाई माध्यम और पारिवारिक प्रोत्साहन का भिन्न स्तर है। भारत जैसे बहुभाषी समाज में शिक्षण का माध्यम विद्यार्थियों की समझ, अभिव्यक्ति और आत्मविश्वास को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है। साथ ही परिवार का शैक्षणिक वातावरण

विद्यार्थियों की सीखने की प्रेरणा और निरंतरता को निर्धारित करता है। अतः भाषाई माध्यम एवं पारिवारिक प्रोत्साहन के प्रभाव का वैज्ञानिक अध्ययन करना आवश्यक हो जाता है, जिससे माध्यमिक स्तर पर प्रभावी, न्यायपूर्ण एवं समावेशी शिक्षा व्यवस्था विकसित की जा सके।

❖ परिसीमन

प्रस्तुत शोध कार्य भाषाई माध्यम एवं पारिवारिक प्रोत्साहन माध्यमिक स्तर का अध्ययन तक सीमित रखा गया।

तालिका संख्या 1

समूह	विद्यार्थियों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	t-मूल्य	सार्थकता स्तर
हिंदी माध्यम	50	68.42	8.35	3.21	0.05
अंग्रेज़ी माध्यम	50	61.18	7.92		स्तर पर सार्थक

❖ शोध विधि

प्रस्तुत शोध कार्य हेतु प्रायोगिक विधि का उपयोग किया गया।

तालिका 1 से स्पष्ट है कि हिंदी माध्यम के विद्यार्थियों का मध्यमान अंग्रेज़ी माध्यम के विद्यार्थियों से अधिक है। प्राप्त t-*मूल्य* 0.05 स्तर पर सार्थक है, जिससे यह सिद्ध होता है कि भाषाई माध्यम के आधार पर शैक्षणिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया गया।

तालिका संख्या-2

समूह	विद्यार्थियों की संख्या (N)	मध्यमान (Mean)	मानक विचलन (SD)	t-मूल्य	सार्थकता स्तर
उच्च पारिवारिक प्रोत्साहन	50	70.56	7.48	4.05	0.01 स्तर पर सार्थक
निम्न पारिवारिक प्रोत्साहन	50	59.84	8.10		

तालिका 2 दर्शाती है कि उच्च पारिवारिक प्रोत्साहन प्राप्त विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि निम्न प्रोत्साहन प्राप्त विद्यार्थियों की तुलना में अधिक है। प्राप्त t-मूल्य 0.05 स्तर पर सार्थक है, जिससे पारिवारिक प्रोत्साहन का प्रभाव स्पष्ट होता है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध **"भाषाई माध्यम एवं पारिवारिक प्रोत्साहन : माध्यमिक स्तर का अध्ययन"** से यह स्पष्ट निष्कर्ष प्राप्त होता है कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि और भाषा-बोध पर भाषाई माध्यम तथा पारिवारिक प्रोत्साहन का महत्वपूर्ण एवं सार्थक प्रभाव पड़ता है। अध्ययन से यह ज्ञात हुआ कि परिचित भाषाई माध्यम में शिक्षण प्राप्त करने वाले तथा सकारात्मक पारिवारिक वातावरण में अध्ययन करने वाले विद्यार्थी अधिक आत्मविश्वास के साथ सीखने की प्रक्रिया में संलग्न रहते हैं। भाषाई माध्यम विद्यार्थियों की समझ, अभिव्यक्ति और विषय-वस्तु ग्रहण करने की क्षमता को सुदृढ़ करता है, जबकि पारिवारिक प्रोत्साहन उनकी प्रेरणा, निरंतरता और अकादमिक सफलता को बढ़ावा देता है। इस प्रकार यह शोध यह सिद्ध करता है कि भाषा शिक्षण की प्रभावशीलता तभी सुनिश्चित हो सकती है जब विद्यालय और परिवार दोनों मिलकर विद्यार्थियों के समग्र विकास में सहयोग करें।

सुझाव

- माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों को उनकी भाषाई पृष्ठभूमि के अनुरूप शिक्षण माध्यम उपलब्ध कराया जाना चाहिए।
- विद्यालयों द्वारा अभिभावकों को विद्यार्थियों की शिक्षा में सक्रिय सहभागिता हेतु नियमित रूप से जागरूक किया जाना चाहिए।
- भाषा शिक्षण में पारम्परिक पद्धतियों के स्थान पर संवादात्मक एवं विद्यार्थी-केंद्रित विधियों को अपनाया जाना चाहिए।
- शिक्षा नीति में भाषाई विविधता और पारिवारिक प्रोत्साहन को महत्वपूर्ण शैक्षणिक कारक के रूप में सम्मिलित किया जाना चाहिए।

संदर्भ सूची

अमरनाथ (2013): हिंदी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली, राजकमल, प्रकाशन नई दिल्ली।

ढोंढियाल एस.एन. एवं फाटक, ए.बी. (2006): शैक्षिक अनुसंधान का विधिशास्त्र राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर।

एन.सी.ई.आर.टी. (2005) राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रुपरेखा नई दिल्ली।

मेहरोत्रा, आर.सी. "सैकण्डरी सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेान" एम.बी. बुच 1972-78 पृ.सं. 296।

शर्मा आर.ए. (1995) शिक्षा अनुसंधान सूर्या पब्लिकेशन मेरठ।

शर्मा राजमणि (2014): हिंदी भाषा इतिहास और स्वरूप, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली।सिंह लाल साहब (2007) मापन, मूल्यांकन एवं सांख्यिकी साहित्य प्रकाशन आगरा।

सिंह निरंजन कुमार (2011): माध्यमिक विद्यालयों में हिंदी शिक्षण राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी जयपुर।